आज़ादी का अमृत महोत्सव

महाराष्ट्र शासन

स्वातंत्र्याचा अमृत महोत्सव

सांस्कृतिक कार्य विभाग,

महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी, मुंबई एवं

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

तथा

संत कबीर प्रतिष्ठान, लातूर (महाराष्ट्र)

के संयोजकत्व में

आज़ादी का अमृत महोत्सव

के उपलक्ष्य में आयोजित

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

स्वाधीनता आंदोलन में भाषा और साहित्य का योगदान

(हिंदी-मराठी के विशेष संदर्भ में)

तिथि : 23 मार्च 2022

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि प्रा./डॉ. नयन भादुले - राजमाने

जी.के. जोशी (रात्र) वाणिज्य महाविद्यालय लातूर ने

दि.23 मार्च 2022 को 'स्वाधीनता आंदोलन में भाषा और साहित्य का योगदान' इस विषय पर आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में विशेष अतिथि/सत्राध्यक्ष/शोधालेख प्रस्तोता/प्रतिभागी के रुप में उपस्थित रहकर सक्रिय सहयोग प्रदान किया।

डॉ. अंबादास देशमुख का हिंदी भाषा को योगदान इस विषय पर शोधालेख प्रस्तुत किया। एतदर्थ यह प्रमाणपत्र दिया जाता है।

प्रो.डॉ.रणजीत जाधव	श्री.सचिन निंबाळकर	प्रा.डॉ.दिलीप गुंजरगे
संयोजक	सहनिदेशक तथा सदस्य सचिव, महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी, मुंबई	सहसंयोजक

PARVATI/9890422434

16. प्रेमचंद के उपन्यासों में गाँधीवाद — 102
- डॉ. सन्मुख नागनाथ मुच्छटे

17. पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र': की राष्ट्रीय आंदोलन की कहानियाँ — 106
डॉ. विजय नागनाथ वडवराव

18. स्वाधीनता आंदोलन और डॉ. रामकुमार वर्मा के एकांकी नाटक — 110
-प्रा. डॉ. धीरज जनार्धन व्हते

19. 'भारत दुर्दशा' स्वाधीनता आन्दोलन के परिप्रेक्ष्य में — 116
-प्रकाश विट्ठल सोनवणे

20. स्वाधीनता-आंदोलन और हिंदी कहानी में नारी — 120
- राणुबाई सुभाष कोरे

21. प्रो. अम्बादास देशमुख एक हितैषी सर्व प्रिय व्यक्तित्व — 123
- प्रो. मुकुंद धर्मा गायकवाड

22. स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी मराठी उपन्यास — 128
डॉ. गोविंद बुरसे

23. दयाप्रकाश सिंह का इतिहास नाटक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का जोखिम उठाता नाटक — 136
-प्रा. डॉ. रमेश कांबळे

24. स्वाधीनता आंदोलन में लोकमान्य तिलक की पत्रिकाओं का योगदान — 141
- लेफ्टनंट प्रा. ज्ञानेश्वर सोनेराव चिट्टमपल्ले

25. स्वतंत्रता संग्राम और हिंदी उपन्यास में समाजवादी चेतना — 144
-प्रो.डॉ. बबन रंभाजीराव बोडके

26. हिंदी उपन्यासों में क्रांतिकारी आंदोलन का चित्रण — 148
-डॉ. हुमनाबादे विरनाथ पांडुरंग

27. स्वतंत्रता आन्दोलन में हिंदी फिल्मों की ऊर्जामयी भूमिका — 152
डॉ. जयंत ज्ञानोबा बोबडे

28. स्वाधीनता आंदोनलन और देश विभाजन (लौटे हुए मुसाफिर के संदर्भ में) — 158
-डॉ. मा. ना. गायकवाड

29. औपनिवेशिक भारत का 'सोजे वतन' — 164
- डॉ प्रकाश कोपर्डे

30. डॉ. अंबादास देशमुख जी की भाषा-शिक्षण विषयक दृष्टि एवं चिंतन — 171
-डॉ. कुमार बनसोडे

31. स्वाधीनता आन्दोलन और हिन्दी फिल्में — 175
-डॉ. ज्ञानेश्वर देशमुख

32. स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी उपन्यास : (कर्मभूमी और गोदान के संदर्भ में) — 178
- प्रा. डॉ. सादिकअली हबीबसाब शेख

33. डॉ. अंबादास देशमुख का हिंदी भाषा को योगदान — 182
- प्रा. नयन भादुले-राजमाने

34. स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी भाषा — 187
-प्रा. डॉ. अभिमन्यु नरसिंगराव पाटील

35. स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी भाषा का योगदान — 193
- प्रा. डॉ. गिरि डी.व्ही.

36. स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी एवं मराठी पत्र-पत्रिकाओं का योगदान — 197
-डॉ. सविता पुंडलिक चौधरी

37. स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी फिल्में — 206
-डॉ. गणपत श्रीपतराव माने

38. भारतीय फिल्में और स्वाधीनता संग्राम — 209
श्री. ज्ञानेश्वर विनायकराव बोडके

39. यशपाल के उपन्यासों में स्वाधीनता आंदोलन — 213
-प्रा. अमोल ज्ञानोबा लांडगे

40. स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी फिल्में — 217
-श्री किशोर श्रीमंत ओहोळ

41. स्वाधीनता आंदोलन में पत्र-पत्रिकाओं का योगदान — 222
प्रा. परमेश्वर माणिकराव वाकडे

42. आधुनिक हिंदी उपन्यास और स्वाधीनता आंदोलन — 226
-प्रा. डॉ. बालाजी रामराव गायकवाड

43. हिंदी पत्रकारिता : समाज सुधार तथा स्वाधीनता आंदोलन — 233
- डॉ. सूजीत सिह परिहार

मराठी

44. आदिवासी मराठी कादंबरी आणि स्वातंत्र्य संग्राम — 238
-प्रा. नवनाथ निवृत्ती बेंडे

45. जळता गोमंतक मधून घडणारे गोतमंतकीय स्वातंत्र्य संग्रामाचे चित्रण — 243
-प्रा. उगम उमेश परब

डॉ. अंबादास देशमुख का हिंदी भाषा को योगदान

प्रा. नयन भादुले- राजमाने

भाषाविज्ञान के महान चिंतक तथा इस कठीन विषय को आसान तरीके से विद्यार्थियों के सामने विशिष्ट शैली द्वारा प्रस्तुत करने वाले बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी कुशल अध्यापक तथा सफल शोध- निर्देशक डॉ.अंबादासजी देशमुख रहे है। उनके पिताजी गांव के जमींदार थे। जो १२५ एकर जमीन के मालिक थे। उनके परिवार के उपजीविका एक मात्र साधन खेती बाड़ी ही रहा है। परिवार में कोई ज्यादा पढ़ा लिखा नहीं था इसी कारण उनके जन्म तिथि में संदिग्धता है। स्कूली दप्तर के अनुसार उनकी जन्मतिथि २ फरवरी १९४९ है। उनका पैतृक गांव वडगांव है। उस समय वडगांव में केवल ३ री कक्षा की पढ़ाई की व्यवस्था होने के कारण वडगांव में तीसरी कक्षा तक पढ़ाई की। तीसरी कक्षा के बाद चौथी कक्षा के लिए मुरुड में दाखिल हुए। उन्हें हर रोज आठ कि. मी. पैदल चलते हुए तथा जब बारिश होती थी उस दिन बाढ़ से बचने हेतु १५ कि.मी. की दूरी तय करनी पड़ती थी। पांचवी कक्षा से नौवीं कक्षा तक की पढ़ाई निपाणी नामक गांव में हुई। दसवीं कक्षा लातुर में आकर पुरी करनी पडी मॅट्रिक के बाद दयानंद महाविद्यालय में प्रवेश लिया। पी. यू. सी. के बाद सीधा प्रथम वर्ष में प्रवेश लिया। इसी महाविद्यालय में एम. ए. हिंदी किया। आगे केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से एम. एड. तथा पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। इस तरह अत्यंत विपरीत परिस्थितियों में संघर्ष करते हुए उन्होंने अपनी पढ़ाई पूरी की। वे अपने परिवार के उच्च शिक्षा प्राप्त पहिले व्यक्ति रहे है।

डॉ.सूर्यनारायण रणसुभे के सतत प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से लेखन का प्रारंभ उन्होंने किया। तथा उनकी पहली किताब आरती प्रकाशन से "भाषाविज्ञान एवं हिंदी भाषा" प्रकाशित हुई। इसके बाद वे निरंतर लेखन प्रक्रिया से जुड़ते चले गये। आगे जाकर "प्रयोजनमूलक हिंदी के अधुनातन आयाम" यह बृहद आकार की पुस्तक आयी। जिसे महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी ने पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी पुरस्कार प्रदान किया। हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा है और सारे भारतवर्ष में द्वितीय भाषा के रूप में सिखायी जाती है। अहिंदी प्रान्तों में आज लाखों विद्यार्थी द्वितीय भाषा या अन्य भाषा के रुप में हिंदी का अध्ययन कर रहे है। इसलिए हिंदी शिक्षा के क्षेत्र में नई जिज्ञासा उत्पन्न हो रही है। अहिंदी भाषियों को हिंदी सिखाने का वैज्ञानिक तथा प्रभावशाली उपाय क्या हो सकता है? डॉ. अंबादासजी देशमुख ने भाषा विज्ञान जैसे कठिन विषयों को आसान बनाते हुए छात्रों के गले में उतारते हुए भाषाविज्ञान से सम्बध्दित विषयों पर इन्होंने

शोधकार्य करवाया है। इनके द्वारा लिखी दर्जनों किताबें भाषा, भाषाविज्ञान, मीडिया, व्याकरण और प्रयोजनमूलक हिंदी से है। हिंदी की सेवा वे आजीवन करते रहे है।

उनके प्रकाशित ग्रंथ:

१. हिंदी तथा मराठी की व्याकरणिक कोटियॉ, अतुल प्रकाशन, कानपूर।
२. भाषाविज्ञान तथा हिंदी भाषा का इतिहास, आरती प्रकाशन, औरंगाबाद।
३. व्यावहारिक हिंदी तथा गद्य के विविध रूप, अभय प्रकाशन, नांदेड।
४. भाषिक,हिंदी भाषा तथा भाषा शिक्षण, अतुल प्रकाशन, कानपूर।
५. प्रयोजनमूलक तथा व्यवहारिक हिंदी, छाया प्रकाशन, कानपूर।
६. हिंदी भाषा का परिचय- यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ, नाशिक।
७. हिंदी और मराठी की समानस्रोतीय भिन्न वर्तनी की शब्दावली, अतुल प्रकाशन, कानपुर।
८. प्रयोजनमूलक हिंदी के अधुनातन आयाम, शैलजा प्रकाशन, कानपुर।
९. भाषाविज्ञान के अधुनातन आयाम एवं हिंदी भाषा, शैलजा प्रकाशन, कानपुर।
१०. भाषा- शिक्षण, अतुल प्रकाशन, कानपुर। आदि...

डॉ. अंबादास देशमुख ने शोध परीक्षण का कार्य भी किया है -

१. केरल विश्वविद्यालय, तिरुवनंतपुरम
२. उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद
३. अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रींवा, मध्य प्रदेश
४. मुंबई विश्वविद्यालय, कोल्हापुर
५. शिवाजी विश्वविद्यालय, जलगांव
६. उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगांव
७. स्वा.रा.ती.विश्वविद्यालय, नांदेड
८. पुणे विश्वविद्यालय, पुणे
९. हिंदी प्रचार सभा मद्रास की शोध उपाधियोंके लिए परीक्षक के रूप मे कार्य।

डॉ. अंबादास देशमुख ने लगभग पचास राष्ट्रीय संगोष्ठियों में सहभाग लिया है। तथा निम्नलिखीत रिसर्च प्रोजेक्ट किए है:

१. हिंदी मराठी के पुरुषवाचक-सर्वनाम एक व्यक्तिरेकी अध्ययन।
२. हिंदी मराठी की लिंग-व्यवस्था एक व्यक्तिरेकी अध्ययन।
३. हिंदी मराठी समान-स्रोतीय भिन्न-वर्तनी की शब्दावली।

* शोध विषय: हिंदी मराठी की व्याकरणिक कोटियों का तुलनात्मक अध्ययन उनके शोध का विषय रहा है।

डॉ. अंबादास देशमुख की अन्य गतिविधियॉं:

१. महाराष्ट्र राज्य हिंदी परिषद के उपाध्यक्ष के रूप मे कार्यरत

२. संत कबीर प्रतिष्ठान, लातूर ते अध्यक्ष के रूप मे कार्यरत

* डॉ.अंबादास देशमुख का हिंदी प्रचार कार्य: १९७७ से १९८३ तक हिंदी प्रचार कार्य हेतु असम, नागालँड,मनिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा, अरुणांचल प्रदेश आदि स्थानों का भ्रमण किया है।

* डॉ. अंबादास देशमुख की विशेषज्ञता:

१. भाषाविज्ञान

२.व्यक्तिरेकी भाषाविज्ञान

३.अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान

४.प्रयोजनमूलक हिंदी

४. भाषा-शिक्षण

५. लोकसाहित्य और जन-जाति साहित्य।

*डॉ. अंबादास देशमुख के शोध- निर्देशन में कुल मिलाकर ३२ शोध-छात्र ने पीएच.डी उपाधि प्राप्त की है, तथा ३२ शोध-छात्र ने एम. फिल. उपाधी प्राप्त की है।

डॉ. अंबादास देशमुख को प्राप्त पुरस्कार:

१. सुभद्राबाई देशमुख बहुउद्देशीय युवा प्रतिष्ठान तथा भगवान महावीर क्रीडा सांस्कृतिक युवा व्यायाम मंडल, अंबाजोगाई की ओर से कै. भैरवनाथ शिंदे स्मृति "ग्राम भूषण" राज्यस्तरीय पुरस्कार।

२. स्वातंत्र्योत्तर उत्तराधिकारी समिती तथा स्वामी रामानंद तीर्थ सरस्वती शिक्षण प्रसारक मंडल, औरंगाबाद की ओर से "मराठवाडा रत्न" राज्यस्तरीय पुरस्कार।

३. इंडिया इंटरनॅशनल सोसायटी डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली की ओर से "भारत ज्योती अवार्ड" राष्ट्रीय पुरस्कार।

४. महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी, मुंबई की ओर से पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी पुरस्कार।

हिंदी भाषा की संरचना को लेकर इन्होंने विपूल मात्रा में लेखन किया है। अहिन्दी भाषिक लोगों के लिए यह साहस का काम है। क्तिु डॉ. अंबादास जी ने भाषा जैसे कठिन विषय पर आत्मविश्वास और अधिकार के साथ लेखन किया है। सर के लेखन की प्रमुख विशेषता यह है कि वे कठिन विषय को सरल सुबोध एवं उसे वे साधारण बनाते है। अपने लेखन के साथ-साथ वे सफल शोधनिर्देशक भी है। उन्होंने 42 शोधछात्रों को विद्यावाचस्पति तथा 36 शोधार्थियों को एम.फील के लिए शोध निर्देशन किया है। आपका हिंदी के प्रति समर्पित जीवन देखकर हम जैसे छात्रों को गर्व होता है डॉ. अंबादासजी देशमुख भाषा का अध्ययन छात्रों के लिए कितना अनिवार्य है इसके संबंध में कहते है कि-'' आजकल के विद्यार्थियों को भाषा का अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक है। इसका कारण यह है कि आजकल के छात्र भाषा के प्रति सजग नहीं है।

उनमें भाषा की ढेर सारी गलतियॉ देखी जा सकती है। शुध्द भाषा के प्रयोग के लिए भाषा का अध्ययन निश्चित रूप से आवश्यक है।''4 डॉ. अंबादासजी देशमुख इस बात से नाराज है कि आज भाषाविज्ञान पर ज्यादा शोधकार्य नहीं हो रहेहै। वह यह भी कहते है कि, प्रत्येक व्यक्ति की अभिरुचि का क्षेत्र अलग अलग होता है। और वह उस क्षेत्र में ज्ञाता बनने की कोशिश करते है। आज वैश्वीकरण के युग में भाषा अध्ययन आवश्यक हो गया है। आज पुरा विश्व सिमटकर एक गांव बन गया है। इसी कारण एक भाषा का प्रभाव दुसरी भाषा पर पडता हुआ नजर आ रहा है। आजकल संसार में लगभग 6000 भाषाए प्रचलित है। यह सभी भाषाए अलग अलग परिवारों से संबंधित है। कुछ भाषाए एकदुसरे से समानता रखती है तो कुछ भाषाए एक दुसरे से भिन्न है। भाषाओं की लेन देन समाज में होनी चाहिए वह विकसित होनी चाहिए इसलिए भाषा का अध्यन आवश्यक है यही उनकी धारणा थी। डॉ. अंबादासजी देशमुख साहित्य के विद्यार्थी नहीं रहे किंतु उनके प्रिय साहित्यकार प्रेमचंद थे। अध्ययन और अध्यापन के अलावा वे कबड्डी और व्हॉलीबॉल खेलते थे। इनका जीवन हिंदी के प्रति समर्पित था इन्होंने अवकाशप्राप्ति के बाद लातूर में ''संत कबीर प्रतिष्ठान'' इस संस्था की स्थापना कर वे उसके अध्यक्ष के रूप में अंत तक काम करते रहे। सभी हिंदी के प्रेमियों एक जगह लाकर हिंदी की सेवा करने का इस प्रतिष्ठान के द्वारा सुअवसर प्रदान किया। यही उनकी कर्मशिलता का द्योतक है। उन्होंने भाषाविज्ञान को आसान बनाते हुये कई सारे ग्रंथो का निर्माण किया है आनेवाले पीढि के छात्र इन पुस्तको का अवश्य लाभ उठा सकते है। जीवनपर्यत उनका हिंदी भाषा के प्रति सेवाभाव और लगाव दिखाई देता है। यह उनकी कर्मशीलता का द्योतक है। उन्होंने अपने छात्रों के अपने समान बनाने का प्रयास किया है। ऐसे विद्ववत्ता के सुपुत की मृत्यु दि. 23 मार्च 2021 को हुई भाषाविज्ञान का अध्येता इस हिंदी परिवार को छोडकर हमेशा के लिए अलविदा हो गया इस बात का दुःख हमेशा हिंदीप्रेमियों को रहेगा।

''गुर को कीजौ दण्डवत ,कोटि-कोटि परनाम,
कीट न जाने भृंग को, गुरु करले आप समान।।''

आप पचास साल पुराने विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग अध्यक्ष भी रहें। आपने प्रोफेसर पद पर ही अवकाश ग्रहण किया। सहजता, सरलता एवं व्यापकता आप के स्वभाव की प्रमुख विशेषता रही है। आपका जीवन हिंदी भाषा के प्रति समर्पित रहा है। आपका व्यक्तित्व आडंबररहित रहा है। आपने अपने रास्ते स्वयम् निर्माण किए, सही दिशा लेकर चले। कर्म जीवन का सिद्धांत मानकर पढते-लिखते रहे। कठोर परिश्रम अनुशासन बद्धता के कारण भाषाविज्ञान के विशेषज्ञ के रूप में अपना परिचय बनाने में समर्थ रहें। आपका व्यक्तित्व एकदम एकांतप्रिय, अध्ययनशील, और अनुशासनप्रिय रहा। आप के कार्य एवं स्मृति को विनम्र अभिवादन।

संदर्भ:

- हिंदी तथा मराठी की व्याकरणिक कोटियॉ, अतुल प्रकाशन, कानपुर, १९९१
- भाषाविज्ञान तथा हिंदी भाषा का इतिहास,आरती प्रकाशन, अरंगाबाद, १९९६
- भाषा तथा भाषा विज्ञान के अद्यतन आयाम, शैलजा प्रकाशन, कानपुर, २००९

जी. के. जोशी (रात्र) वाणिज्य
महाविद्यालय, लातूर
bhadulenayan13@gmail.com
मो. नं. ८८०५४२६०७१

34

स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी भाषा

प्रा.डॉ.अभिमन्यु नरसिगराव पाटील

भारत देश में आनेक भाषाएं बोली जाती है। हर प्रांत की भाषा अलग होती है, उसकी बोलीयाँ भी अलग-अलग होती है। जिस प्रकार भाषा अलग होती है वैसे ही हमारी दूसरी भाषा के संदर्भ में देखने का नजरिया भी अलग अलग होता है। हम भाषा के आधार पर एक दूसरे को कम ज्यादा आखने की कोशिश करते हैं। इसी बात का फायदा प्राचीन काल से विदेशी आक्रमणकारियों ने लिया है। उसमें मुघल, पुर्तगाल, अंग्रेज इन सभी ने उसका फायदा लिया है। जब अंग्रेज आए तो उन्होंने इस देश के बारे में जाना कि यहां जात पात धर्म के साथ भाषाई भिन्नता भी है। इसी का आधार लेकर अंग्रेजों ने डेढ़ सौ वर्ष राज किया। राज्य कारभार चलाते वक्त अपने फायदे के लिए कानून लाए अन्याय अत्याचार किए। जैसे 1857 का आंदोलन सैनिक मंगल पांडे ने शुरूआत किया था। सविनय अवज्ञा आंदोलन यह आंदोलन नमक पर ब्रिटिश सरकार ने जो टैक्स लगाया था उसके खिलाफ था। भारत छोड़ो आंदोलन, आजादी प्राप्त करने का एक माध्यम था। आगे चलकर 1943 में ब्रिटिश शासन को भारत के बाहर निकालने के लिए भारतीय राष्ट्रीय सेना का गठन किया गया। साथ में साइमन कमीशन, रोलेट एक्ट, जालियनवाला बाग हत्याकांड एसी दमन कारी नीतियों ने भारत को स्वतंत्रता देने में मदद की, जिसका परिणाम यह हो जाता है कि 15 अगस्त 1947 में भारत स्वतंत्र हो जाता है।

इन सभी आंदोलनों में भाग लेने वाले लोग भारत के अलग प्रांतों के थे। इन सभी को एक जगह मिलकर रणनीति तैयार करने के लिए बहुत कठिनाइयां होती थी। क्योंकि हर प्रांत की भाषा अलग अलग थी। धीरे-धीरे इस समस्या का हल निकलने लगा। इन सभी आंदोलनों को सफल बनाने के लिए हिंदी का बहुत बड़ा योगदान है। आंदोलन करता जब एक जगह मिलते थे तो हिंदी भाषा को अपनाते थे, अपने विचार एक दूसरे से साझा करते थे। अलग-अलग प्रांतों के लोग हिंदी भाषा बोलना समझना जानते थे। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास देखना है तो उसमें हमारी हिंदी भाषा को कम नहीं आंका जा सकता। हिंदी भाषा कि इस शक्ती को उस समय के नेताओं ने जाना जिन्हें हिंदी नहीं आती थी वह हिंदी सीखने लगे। जो काम पहले अंग्रेजी में करते थे अब हिंदी में भी होने लगे। सभा को मार्गदर्शन करने वाला नेता अंग्रेजी और हिंदी में बात करने लगा बड़े-बड़े नेताओं ने हिंदी की शक्ति को जाना और हिंदी यह भाषा हो सकती है जो सभी विविध भाषाई लोगों को एक कर सकती हैं। सभी जनता उस वक्त के शासन के खिलाफ लड़ने के लिए हिंदी भाषा के झंडे के नीचे आना पसंद किया। और

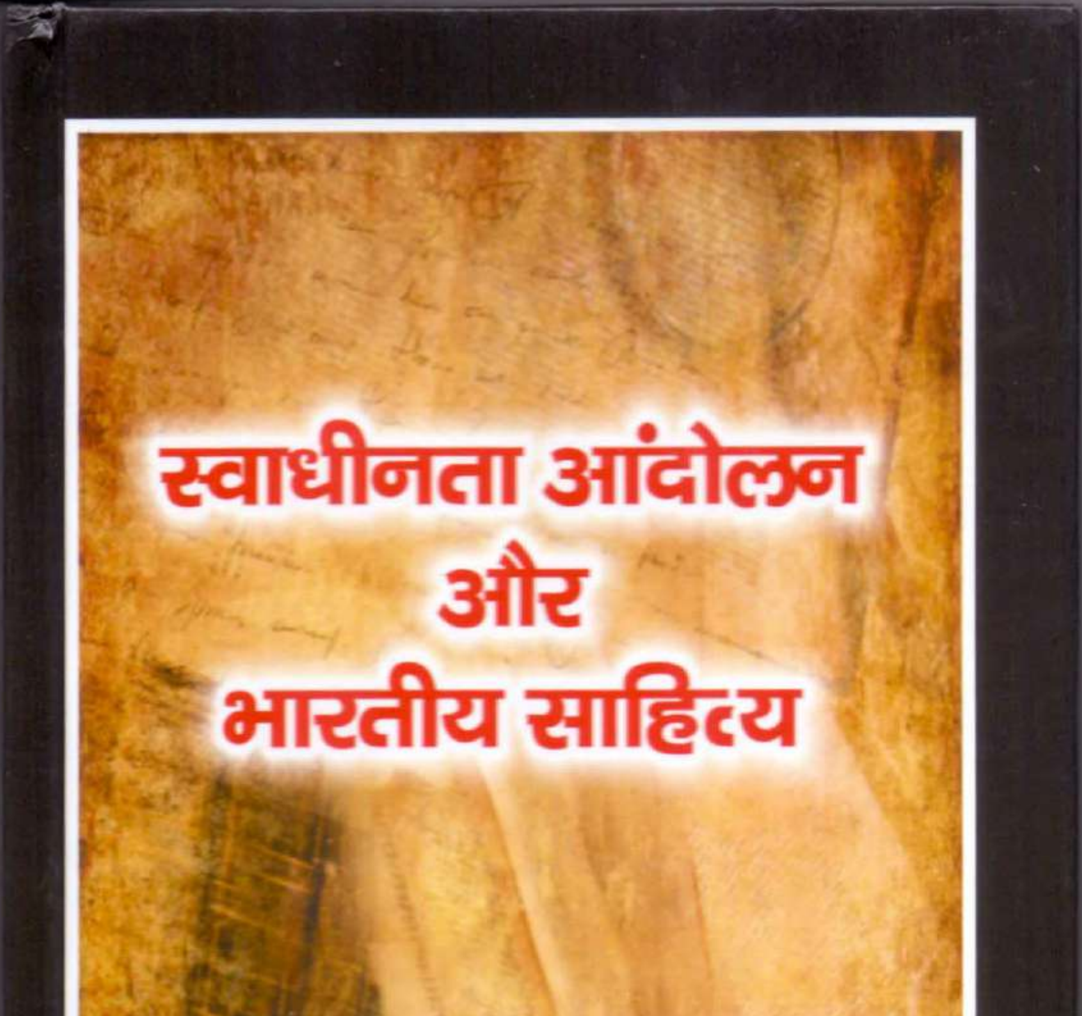

स्वाधीनता आंदोलन
और
भारतीय साहित्य
संपादक :
प्रो. डॉ. रणजीत जाधव
सह संपादक :
प्रा. डॉ. दिलीप गुंजरगे, प्रा. राजेश विभुते

डॉ. रणजीत जाधव

जन्म : जून 1971, चिलखा, तहसिल : अहमदपूर जि.लातूर (महाराष्ट्र)

शिक्षा : एम.ए.हिन्दी (1994) पी.एच.डी. (2003)

लेखन : **1)** हिन्दी साहित्य तथा भाषा को महाराष्ट्र की देन, **2)** स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक, **3)** हिंदी साहित्य विमर्श, **4)** दक्षिण भारतीय संत परम्परा, **5)** संत तुकाराम की हिंदी पदावली, **6)** हिंदी भाषा विविध आयाम **7)** भाषा, साहित्य और संस्कृति चिंतन

सम्पादन : **1)** भाषा तथा भाषा विज्ञान के अद्यतन आयाम, **2)** संत साहित्य और वर्तमान जीवन, **3)** हिंदी मराठी संत साहित्य में प्रगतिशील चेतना, **4)** 'भारतीय भाषा और साहित्य चिंतन', **5)** डॉ.सूर्यनारायण रणसुभे रचनावली, **6)**हाशिए का समाज और हिंदी – मराठी साहित्य, **7)** विलासदीप विशेषांक, **8)** हिंदी साहित्य में संवैधानिक मूल्य, **9)** स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी मराठी कविता, **10)** स्वाधीनता आंदोलन और भारतीय साहित्य

शोध–निर्देशक : स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय,नांदेड की ओर से 6 शोध छात्रों को पी.एच.डी. घोषित

विशेष : **1)** अध्यक्ष, संत कबीर प्रतिष्ठान,लातूर, **2)** कार्यकारणी सदस्य, हिन्दी साहित्य परिषद,लातूर, **3)** राज्य, राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में आलेख वाचन तथा अतिथि के रुप में निमंत्रित, **4)** हिन्दी की स्तरीय पत्र–पत्रिकाओं में 60 लेख प्रकाशित, **5)** आकाशवाणी परभणी केन्द्र से कार्यक्रमों का प्रसारण, **6)** संयोजक : कबीर प्रतिष्ठान, लातूर द्वारा आयोजित पांच संगोष्ठियाँ तथा प्रतिवर्ष 'कबीर व्याख्यानमाला' का आयोजन

पुरस्कार / सम्मान : **1)** महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी,मुंबई का 'आचार्य नंददुलारे वाजपेयी पुरस्कार 2017', **2)** हिन्दी समर्पण सम्मान – 2015 (साहित्यकार संसद,इलाहाबाद) **3)** 'साहित्य भूषण पुरस्कार–2011' (धर्मवीर बहुउद्देशिय सेवाभावी संस्था, लातूर)

संप्रति : प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, स्व.व्यंकटराव देशमुख महाविद्यालय, बाभलगाँव ता.जि.लातूर (महाराष्ट्र)

संपर्क : 'शब्दांकुर', यमुना सोसायटी, पुराना औसा रोड, लातूर–413531 (महाराष्ट्र)

मो॰ : 9421374116 **ई–मेल** : jadhavranjit500@gmail.com

शैलजा प्रकाशन

57-पी, कुंज विहार-II, यशोदा नगर, कानपुर

Mob.: 9451022125 • E-mail: shailjaprakashan@gmail.com

ISBN : 978-81-954734-9-6

9788195473496

₹725/-